Snehal Sindhu

Monthly Bulletin for Divine Message of Spiritual Relationship, Friendship and Love
Vol. 012 Issue 01 JANUARY 2026 Pages 20 A.S. Rs 100

P.P. Bharatbhai's 72nd Pragatya Din celebration at Megarugas Ground-Chandivali

Snehal Sindhu Jan 2026-V13.indd 1 25-03-2026 12:46:26

स्वामिश्रीजी

Wishing you all a Happy, Healthy, Prosperous and Blissful New Year 2026.

सत्संग समाचार

With Famous Music Director Shri. Hari Aanandji

❊ शुक्रवार, दि. २ जनवरी को संगीत के प्रख्यात डायरेकटर श्री. हरि आनंदजी 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर पधारे थे। सभी संतभाईयोंने उनका स्वागत किया और उन्होंने हमारे मंदिर के नूतनीकरण के कार्य की जानकारी प्राप्त करके उसमें संगीत के लिये पाठशाला तथा भजन की प्रवृत्तिओं में सहकार देने की इच्छा भी बताई।

❊ शनिवार, दि. ३ जनवरी को पोषीपूनम, गुणातीतानंदस्वामी दीक्षादिन पर्व और अनुपम मिशन-मोगरी मंदिर का ६वाँ पाटोत्सव संतभगवंत साहेबजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई, पू. किशोरभाई मास्टर्स और स्थानिक संतभाईयों तथा हरिभक्तों की हाजरी में भक्तिभाव से मनाया गया।

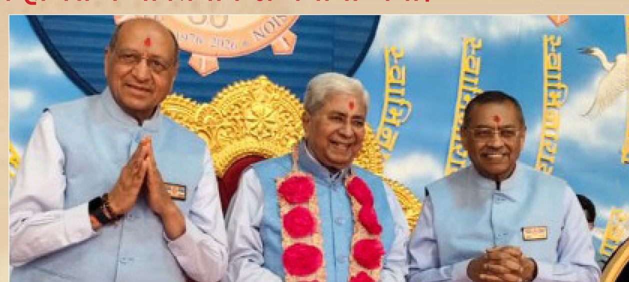

Poshi Poonam, Gunatitanandswami Diksha Din Parva and Anoopam Mission Temple Patotsav at Mogri

Inauguration of Bharatnatyam classes at "Akshardham" Temple, Powai

❊ सोमवार, दि. ५ जनवरी को 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर में भगवान स्वामिनारायण, गुरुहरि काकाजी महाराज और सभी गुणातीत स्वरुपों के आशीर्वाद से भरतनाट्यम् क्लास का उद्घाटन हुआ। दीप प्रागट्य से इस समारोह की शुरुआत हुई। छोटे बच्चोंने उमंग और उत्साह से के साथ नृत्य प्रस्तुत करके सभी को मुग्ध कर दिया।

❊ मंगलवार, दि. ६ जनवरी को सांकरदा मंदिर में योगी डिवाईन सोसायटी की ओर से प.भ. नयनभाई दिवेचाने प.पू. बापुस्वामीजी के वरदहस्तों से स्थानिक स्कूल के बच्चों को स्कूल बेग वितरण करके सामाजिक कार्य किया।

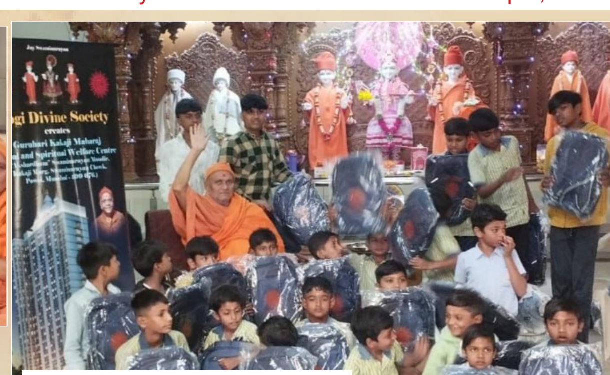

Bag Distribution at Sankarda

Snehal Sindhu Jan 2026-V13.indd 2 25-03-2026 12:46:26

✻ बुधवार, दि. ७ जनवरी की सुबह 'आदिवासी कुकना समाज भजन हॉल' रुमला में प.पू. भरतभाई तथा प.पू. वशीभाई की हाजरी में खातमुहूर्त किया गया। इस समाज के विकास के लिये सभीने आशा व्यक्त की।

Khat Muharat at Rumla

सन् २०२६ की प्रथम भजन संध्या दि. ७ जनवरी को रुमला-घोलार में गुरुहरि काकाजी महाराज की स्मृति में विशिष्ट भजनों के साथ प.पू. दिनकरभाई और पवई के संतभाईयों, संतबहनों, हरिभक्तों की हाजरी में मनाई गई। साथ ही शिक्षापत्री की द्विशताब्दी महोत्सव और प.पू. भरतभाई का ७२ प्रागट्यदिन भी मनाया गया।

प्रारंभ में बालमंडल तथा युवतीओंने स्वागत नृत्य करके सभी का भावपूर्वक स्वागत किया।

Bhajan Sandhya at Rumla-Gholar

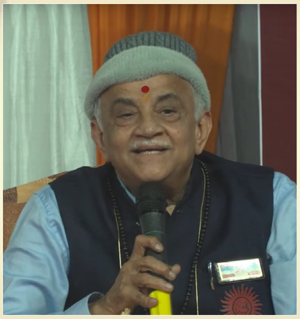

इस उपलक्ष्य में घोलार के सरपंच श्री. वल्लभभाई देशमुखजी, रुमला के सरपंच श्री मणिभाई देशमुखजी भी पधारे थे।

प.पू. भरतभाई ने अपने आशीष में कहा कि रुमला-घोलार जैसे छोटे गांव में भजन संध्या प्रथमबार हो रही है। करीब हजार से भी ज्यादा हरिभक्तों यहाँ आये है वह बहुत बडी बात है। सारी तैयारी करने के लिये रुमला-घोलार के सभी हरिभक्तों को खास धन्यवाद देते है। स्वामिनारायण भगवानने करुणा करके हमें शिक्षापत्री भेट में दी। शिक्षापत्री यानि सर्वजीव हितावह। शिक्षापत्री के नियम किसी भी जाति या धर्म को लेकर नहीं, लेकिन हरेक के लिये है। जो भी शिक्षापत्री के अनुसार जीवन जीयेंगा उसको सुख ही मिलेगा। २१२ श्लोक में जीवन में सुखी होने का मार्ग बता दिया है। शिक्षापत्री सुदर्शन चक्र है, एक रक्षाकवच समान है। गुरुहरि

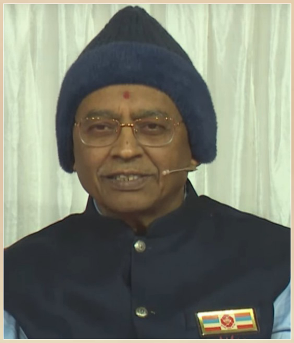

Snehal Sindhu Jan 2026-V13.indd 3 25-03-2026 12:46:26

काकाजी महाराज को साक्षात्कार हुआ उसका सुख उन्होंने हर किसीको दिया। एकबार प.भ. दिनकरभाई देसाईने वशीभाई को पूछा कि आपने काकाजी को कभी बोला नहीं कि हमें भी साक्षात्कार कराओ? तो वशीभाईने कहा कि काकाजी हमें मिले वही हमारा साक्षात्कार। तो ऐसे गुणातीत संतों का हमें दर्शन हो रहा है वही साक्षात्कार की अनुभूति है। तो काकाजीने ऐसी कोई Monopoly रखी नहीं। ब्राह्मीशक्ति मेदान में खुल्ली रख दी। जिसके बाजु में जितना ज्यादा जोर है वह ब्राह्मीस्थिति प्राप्त कर सकता है। काकाजीने हमें एकदम सरल Techniques देकर आध्यात्मिकता प्राप्त करने चाबी दे दी। उन्होंने २४ घंटा धुन करो ऐसा नहीं बोला, लेकिन 4 Point Programme करने की आज्ञा दी। केवल शर्त एक ही रखी कि किसीका मत देखो। काकाजीने रक्षाकवच के रुप में हमें गुणातीत स्वरुपों दिये है। ऐसे छोटे गांव में Coupon की सेवा करके आज यहाँ अर्पण किया। चीमन महाराज को भी खास याद करते है। सेवा के लिये यहाँ के हरिभक्तोंने अपना सबकुछ अर्पण किया है। तो हम सब हरपल प्रसन्न रहे वही प्रार्थना।

प.पू. दिनकरभाई ने अपने आशीष में कहा कि स्वामिनारायण भगवानने संवत १८८२ वसंतपंचमी के दिन शिक्षापत्री वडताल में लिखी। आज तक के इतिहास में रामायण ऋषि वाल्मिकी और संत कवि तुलसीदासने लिखी, भगवद्गीता महाभारत के युद्ध के ६00 साल के बाद लिखी गई लेकिन भगवान के हाथ से केवल शिक्षापत्री ही लिखी गई है। महाराजने केवल २१२ श्लोक में पूरा रहस्य बता दिया। धर्म-ज्ञान-वैराग्य-भक्ति के बारे में वचनामृत में बहुत बातें लिखी है। महाराजने व्यवहार के बारें में शिक्षापत्री में बहुत अच्छे नियम बताये है। ११६वाँ सबसे महत्वपूर्ण श्लोक है - **निजात्मानं ब्रह्मरुपं...** जिससे हमारा जन्ममरण का चक्र निकल जाता है। हमारा जीव अज्ञान से दु:खी होता है। जब बडे पुरुष मिलते है तो ज्ञानचक्षु खोल देते है और जीव ब्रह्मरुप हो जाता है। हमें अपने आत्मा को ब्रह्मरुप मानना है। गुरुहरि काकाजी महाराज दि. ७ मार्च, १९८६ में स्वधाम पधारे तब से उनकी स्मृति में हम आज का दिन मनाते है। गुणातीत समाज के हरेक केन्द्र में आज भजन संध्या होती है। स्थूल रुप से बहुत हरिभक्तों

Bhajan Sandhya at Rumla-Gholar

Snehal Sindhu Jan 2026-V13.indd 4 25-03-2026 12:46:27

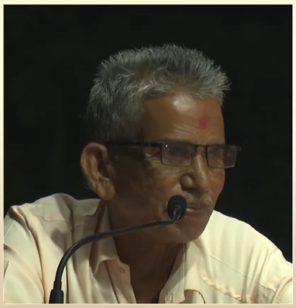

दिखाई दिख रहे है, साथ ही Online भी बहुत भक्तों भजन संध्या का लाभ ले रहे है। तो आज के दिन की स्मृति में हम डूबे रहे वही प्रार्थना।

प.भ. प्रेमाभाई ने कहा कि गुरुहरि काकाजी महाराज की कृपा से ही हम आज तक सत्संग से जुडे है। भारतीय विद्याभवन में पप्पाजी, स्वामीजी, अक्षरविहारीस्वामीजी पधारे थे। तब पप्पाजीने आशीर्वाद दिये थे कि जैसे स्वामीजी आशीष देते है तो सभी के काम हो जाते है, वैसे भरतभाई के संकल्प से सभी के काम होंगे। तो आज भरतभाई, वशीभाई और पवई के संतभाईयोंने पवई में अक्षरधाम मंदिर खडा कर दिया। काकाजीने हमारे लिये तो बहुत सरल कर दिया। आज जो प्रगट स्वरुप मिले है उसमें हमें दिव्यभाव रखना है। काकाजी कहते थे कि प्रार्थना करने में कौन से पैसे देने पडते है? तो हम हरपल धुन-भजन करते रहे। तो बडे सत्पुरुष की ओर हमारी दृष्टि रहे वही प्रार्थना।

अंत में भरतभाई के प्रागट्यदिन निमित्त केक कटिंग हुआ। साथ ही विशिष्ट हार रुमला-घोलार के युवकोंने संतभाईयों को अर्पण किया।

प.भ. प्रेमाभाई और प.भ. देवाभाई तथा प.भ. भाईलालभाई को पवई की ओर से संतभाईयोंने Memento भेट के रुप में दिया।

P.P. Bharatbhai's 72nd Pragatya Din celebration at Rumla-Gholar

✲ शनिवार, दि. १७ जनवरी को वचनामृत ग्रंथ की सभा और मकरसंक्रांति का पर्व 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में भक्तिभाव से मनाया गया।

Jholi Sabha at "Akshardham" Temple, Powai

इस दौरान मुंबई, महाराष्ट्र और गुजरात के कई स्थानों में संतभाईयोंने झोली निमित्त पधरामणी की और सत्संग का लाभ भी दिया। साथ ही भरतभाई का प्रागट्यदिन भी आनंदपूर्वक मनाया गया।

Jholi- Pune

Jholi- Kolhapur

Snehal Sindhu Jan 2026-V13.indd 5 25-03-2026 12:46:27

Jholi- Kolhapur

Jholi- Khujgaon

Jholi- Ghatkopar

Jholi- Ghatkopar

Jholi- Powai

Snehal Sindhu Jan 2026-V13.indd 6 25-03-2026 12:46:28

Jholi- Dahisar-Kandivali

Jholi- Vapi

Jholi- Puni

Jholi- Dombivali

Jholi- Kandivali

Jholi-Vile Parle

Jholi - South Mumbai

Snehal Sindhu Jan 2026-V13.indd 7 25-03-2026 12:46:28

Jholi - Thane

✲ शनिवार, दि. २४ जनवरी को शिक्षापत्री द्विशताब्दी महोत्सव और वसंतपंचमी-ब्र.स्व. शास्त्रीजी महाराज का प्रागट्यदिन 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में भक्तिभाव से मनाया गया।

इस अवसर पर बालमंडल के बच्चोंने शिक्षापत्री के कुछ श्लोक मुखपाठ बताएँ।

साथ ही सद्. ब्रह्मानंदस्वामीजी और सद्. निष्कुलानंदस्वामीजी का भी प्रागट्यपर्व मनाया गया।

Shikshapatri Dwishatabdi Mahotsav & B.S. Shastriji Maharaj Pragatya Din Sabha at "Akshardham" Temple, Powai

प.पू. वशीभाई ने कहा कि शिक्षापत्री ग्रंथ इतना महत्वपूर्ण है कि हमारे मुख्यमंत्री श्री. नरेन्द्रभाई मोदीजीने उसका महत्व पूरे देश को बताया। सरदार वल्लभाई पटेलने भी कहा था कि अगर हिंदुस्तान के सभी राज्यों में शिक्षापत्री दे दी जायेगी तो हमें IPC (Indian Penal Code) देने की जरुरत ही नहीं पडेगी।

आज वसंतपंचमी यानि की शास्त्रीजी महाराज का भी प्रागट्यदिन हम मना रहे है। डुंगर भगत यानि शास्त्रीजी महाराजने ८ साल की उम्र में पारायण किया था। विज्ञानानांदस्वामीजी को मिले और उन्होंने दीक्षा देकर यज्ञपुरुषदास नाम दिया। केवल ६ महिने में ही भगतजी महाराज को मिले। ३१ साल की उम्र में जागास्वामीजी से मिले। ३५ साल की उम्र में शास्त्रीजी महाराज सारंगपुर मंदिर के महंत बने। ४३ साल की उम्र में बोचासण में अक्षरपुरुषोत्तम सिद्धांत की स्थापना की। उनकी ४६ साल की उम्र में राजकोट में योगीजी महाराज पहलीबार उनको मिले। उसके बाद डॉ. नाथाभाई को मिले और दो पुत्र का आशीर्वाद दिया। ऐसे हमें गुरुहरि काकाजी महाराज और गुरुहरि पप्पाजी महाराज मिले। सन् १९२२ में गांधीजी को शास्त्रीजी महाराज मिले थे और आशीर्वाद दिये थे कि अगर हररोज योगीजी महाराज

Snehal Sindhu Jan 2026-V13.indd 8 25-03-2026 12:46:29

माला करेंगे तो २५ साल के बाद आझादी मिलेगी और वह सचमुच हुआ। अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना की स्थापना करने अपनेआप को पूर्णरुप से समर्पित कर दिया। बोचासरण, सारंगपुर, गोंडल, अटलादरा और गढडा ऐसे पाँच स्थानों में मंदिर खडा कर दिया। अब मंदिर को अच्छे से चलाने के लिये साधु चाहिए। तो योगीजी महाराजने ५१ साधु तैयार किये। तो शास्त्रीजी महाराज जैसी साधुता हमारे अंतर में आये और हम काकाजी की पहचान हो जाये वही प्रार्थना।

प.पू. भरतभाई ने कहा कि शास्त्रीजी महाराज का कार्य ही अलग था। बहुत सारी तकलीफ और मुश्केली में उन्होंने सारे कार्य किये। छोटी उम्र में माणभट्ट की कथा भी की। छोटी उम्र में बहुत ज्ञान सहज में उन्होंने प्राप्त कर लिया था। अक्षरपुरुषोत्तम का कार्य करने ही वे पृथ्वी पर पधारे थे। वे करुणामूर्ति थे। गुरुहरि काकाजी महाराज कहते थे कि शास्त्रीजी महाराज अगर प्रगट नहीं होते तो हम अनाथ रह जाते। अक्षरपुरुषोत्तम की शुद्ध उपासना का प्रवर्तन करके उन्होंने हमें सनाथ कर दिया। महाराज ऐसे गुणातीत संत द्वारा प्रगट है वह बात शास्त्रीजी महाराजने स्थापित की। शास्त्रीजी महाराज का कार्य और परिश्रम देखकर विद्वान दौलतराम पंड्याने कहा था कि आपने इतना महान कार्य किया है तो भविष्य में आपके शिष्य आपकी सोने की मूर्ति प्रस्थापित करेंगे। तो ऐसा भाग्य हमको मिला और शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज की सोने की मूर्ति सबसे पहले हमने यहाँ पवई मंदिर में बिठाई। श्रीजीमहाराज की मर्जी को जानकर उन्होंने अक्षरपुरुषोत्तम मंदिर बनाये। उनकी गुरुभक्ति अद्‌भुत थी। भगतजी महाराज और जागास्वामीजी की समान सेवा की। शास्त्रीजी महाराज का जीवन ही शिक्षापत्री के मुताबिक था। अक्षरपुरुषोत्तम उपासना प्रवर्तन के लिये बहुत कष्ट सहन किये और जरुरत पडी तो खुद विमुख भी हो गये। एकबार काकाजी शास्त्रीजी महाराज के पास बैठे थे। तब किसीने पूछा कि ये अक्षरपुरुषोत्तम का काम कौन करेगा? तो उन्होंने काकाजी की ओर दृष्टि करते हुए कहा था कि वह काम करनेवाले पृथ्वी पर प्रगट हो चुके है। उस समय काकाजी को लगा वो मैं ही हूँ। काकाजी खुद ये प्रसंग बताते थे। शास्त्रीजी महाराज का सबसे ज्यादा प्रेम काकाजी और कांतिकाका के प्रति था। दासस्वामीजीने बहुत अच्छा बताया कि पहले सब केवल स्वामिनारायण ऐसा ही बोलते थे। लेकिन शास्त्रीजी महाराजने उसकी पहचान करवाई कि स्वामि यानि अक्षर और नारायण यानि पुरुषोत्तम। स्वामी में रहे हुए नारायण यानि स्वामिनारायण। ऐसे दिगंत में अक्षरपुरुषोत्तम का डंका बजाया। ऐसे शास्त्रीजी महाराज का जितना महिमागान करें उतना कम है।

आज हम शिक्षापत्री द्विशताब्दी महोत्सव भी मना रहे है। शिक्षापत्री में जो छोटे छोटे नियम बताये है वह भी हम जीवन में उतारेंगे तो जीवन में सहज सुख-आनंद रहेगा। तो ब्रह्मरुप होकर परब्रह्म की भक्ति हम करते हो जायें वही प्रार्थना।

बालमंडल की प.भ. श्रेयाने पवई मंदिर के नूतनीकरण के कार्य के लिये उनकी स्कूल की छात्राओंने मिलकर Fund इकठ्ठा किया वह संतभाईयों के चरणों में अर्पण किया।

प.पू. दिनकरभाई ने कहा कि दासस्वामीजी का एक प्रवचन सुना था, उसमें उन्होंने स्वामिनारायण का मतलब बहुत अच्छे से बताया। स्वामिनारायण का चार अर्थ होता है। **(१)** स्वामीनारायण यानि सबके स्वामी वो स्वामीनारायण। स्वामिनारायण भगवानने अपने गुरु के दो नाम से ही मंत्र दिया है ऐसे किसीको ख्याल नहीं आया। स्वामी और नारायण ऐसे कहा जायेगा। गुणातीतानंदस्वामी और श्रीजी महाराज की

Snehal Sindhu Jan 2026-V13.indd 9 25-03-2026 12:46:29

जोडी ऐसा भी अर्थ होता है। स्वामी सहित नारायण ऐसा भी कहा जाता है। नीलकंठवर्णी को विचरण के दौरान किसीने पूछा था कि आप इतने बडे हो तो भविष्य में आपको कौन से नाम से संबोधित करें? तो उन्होंने कहा था कि स्वामिनारायण नाम से मेरा प्रचार होगा। लेकिन भगवान को मर्यादा में अपनी लीला दिखानी पडती है। वैसे ही गुरुहरि काकाजी, पप्पाजी और गुणातीत संतों की लीला समझना सरल नहीं है। **(२)** स्वामिनारायण ऐसे लीखा जाये तो वो केवल स्वामिनारायण नाम हो जाता है। जीव-ईश्वर-माया-ब्रह्म - इसमें ब्रह्म में जो तत्त्व है यानि गुणातीतानंदस्वामी मूलअक्षर वह चौथा तत्व है। पाँचवा तत्व यानि स्वामिनारायण भगवान। हम जिस भाव से अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना करते है वह हमें शास्त्रीजी महाराजने सीखाई। वह उपासना उस Level तक पहुँची है कि २ हजार साल के भी इतिहास में षट्दर्शन बताये गये है। उसमें BAPS के प.पू. भद्रेशस्वामीजीने आज साँतवा दर्शन हमारे जीवन में रखा। काशी के बडे पंडितो के सामने रखा जिसका उन्होंने स्वीकार किया। अभी हमें नहीं समझेगा लेकिन आगे जाकर ये षट्दर्शन भी बाजु में रह जायेंगे और अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन ही रहेगा। मैंने AI (Artifical Intelijce) में शास्त्रीजी महाराज की जन्म की माहिती निकाली थी। उसमें आया शास्त्री धर्मजीवनस्वामी का आया। तो मैंने हमारे शास्त्रीजी महाराज की जानकारी लिखी। तो उसने अलग-अलग करके दिखाया। तो यहीं सच्चा ऐसा मानकर हमें चलना नहीं है। शास्त्रीजी महाराज के साथ अन्य हरिभक्तों में से काकाजी उच्च कक्षा के भक्त कहे जाते है। शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज एक ही है। अभी भरतभाई का प्रागट्यदिन आनेवाला है तो उनकी स्मृति में रहे और उनका महिमागान ज्यादा से ज्यादा करें वही प्रार्थना।

✲ सोमवार, दि. २६ जनवरी को गुरुहरि काकाजी महाराज का प्राकट्यस्थान नडियाद के 'प्रसादरज' मंदिर की मूर्तियों के १३वें पाटोत्सव निमित्त विशिष्ट महापूजा हुई। पवई से प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, परम प्रकाश से पू. विरेनभाई, पू. इलेशभाई और अन्य संतभाईयों, गुणातीत ज्योत से पू.डॉ. नीलमबहन और संतबहनों, पवई से पू. कुसुमताई और अन्य संतबहनों तथा हरिभक्तों की उपस्थिति महापूजा भक्तिभाव से हुई।

Mahapooja at "Prasadraj" Temple, Nadiad

Snehal Sindhu Jan 2026-V13.indd 10 25-03-2026 12:46:29

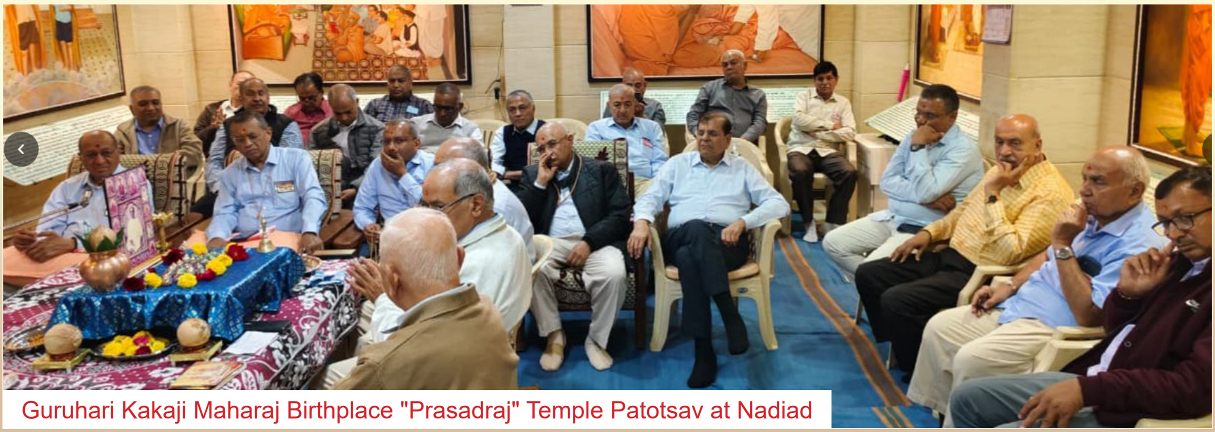

Guruhari Kakaji Maharaj Birthplace "Prasadraj" Temple Patotsav at Nadiad

शाम को सभी संतभाईयों, संतबहनों गुणातीत ज्योत प.पू. हंसादीदी को मिलने पधारे। भजन–कथावार्ता करके भरतभाई का प्रागट्यदिन भी आनंदपूर्वक मनाया गया।

With P.P. Hansadidi at Guantit Jyot-Vallabh Vidhyanagar

उसी दिन शाम को प.भ. घनश्यामभाई कोठारी, पू. मननभाई और प.भ. देवांगभाई कांदिवली में प.पू. निर्मलस्वामीजी से मिले और दि. ३१ को प.पू. भरतभाई के प्रागट्यदिन में शामिल होने खास आमंत्रण भी दिया।

✻ मंगलवार, दि. २७ जनवरी को प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई और अन्य संतभाईयों कांदिवली में प.भ. परेशभाई परमार के घर प.पू. निर्मलस्वामीजी को मिलने खास पधारे थे।

With P.P. Nirmalswamiji at Kandivali and P.B. Pareshbhai Parmar's home

Snehal Sindhu Jan 2026-V13.indd 11 25-03-2026 12:46:29

✻ शनिवार, दि. ३१ जनवरी शाम को प.पू. भरतभाई का ७२वाँ प्रागट्यदिन चंदिवली के Megarugas Ground में प.पू. दिनकरभाई, सांकरदा के प.पू. बापुस्वामीजी, पू. ब्रह्मानंदस्वामीजी और संतों, प.पू. निर्मलस्वामीजी और अन्य संतों, पू. विजयप्रकाशस्वामीजी और संतों, हरिधाम से प.पू. सौजन्यबहन और संतबहनों, दिल्ली से प.पू. आनंदीदीदी तथा अन्य बहनों और देश-विदेश के एवं स्थानिक हरिभक्तों तथा महानुभावों की हाजरी में भक्तिभाव से मनाया।

P.P. Bharatbhai's 72nd Pragatya Din celebration at Megarugas Ground-Chandivali

'काकाजीऐ ओळखाव्या साधु आ कृपा करी, व्हाला ऐवा भरतभाई याचुं आशीष करगरी...' भजन की इस पंक्ति को ध्यान में रखते हुए मंच की सजावट की गई थी।

प्रारंभ में बालमंडलने विशिष्ट स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया। संभाजी नगर के युवकोंने भावनृत्य प्रस्तुत कर भरतभाई के चरणों में अपनी भक्ति अदा की।

P.P. Bharatbhai's 72nd Pragatya Din celebration at Megarugas Ground-Chandivali

Snehal Sindhu Jan 2026-V13.indd 12 25-03-2026 12:46:32

P.P. Bharatbhai's 72nd Pragatya Din celebration at Megarugas Ground-Chandivali

प्रथम प.भ. हैरतभाई वाढेर, पू. हर्षितभाई ने स्वानुभाव के प्रसंग बताकर भरतभाई के विशिष्ट गुणों का माहात्मयदर्शन कराया।

प.भ. हेमंतभाईने पवई मंडल की ओर से भरतभाई के लिये जो प्रार्थना लिखी थी उसका पठन किया।

प.भ. रमेशभाई त्रिवेदी ने स्वरचित काव्य पंक्ति प्रस्तुत कर अपनी भावना भरतभाई के चरणों में रखी।

उसके बाद पू. राकेशभाईने प.पू. गुरुजीने भरतभाई के लिये जो आशीर्वाद भेजे उसका पठन किया।

पू. मणिभाई हरिया ने कहा कि गुरुहरि काकाजी महाराजने ब्र.स्व. हरिप्रसादस्वामीजी की मुझे भेट

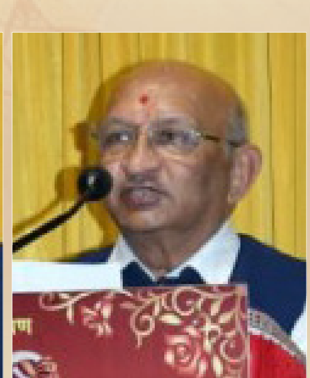
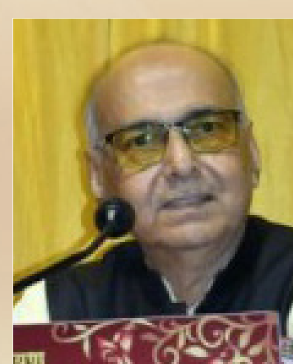

Snehal Sindhu Jan 2026-V13.indd 13 25-03-2026 12:46:33

दी। भरतभाई और वशीभाईने काकाजी की हरेक रुचि जानकर सेवा की। आज पवई का नूतनीकरण का कार्य देखकर बहुत हर्ष हो रहा है। गुणातीत समाज में पहलीबार इतना बडा मंदिर बनने जा रहा है। काकाजी का संकल्प पूर्ण करने पवई के संतभाईयों अथाक परिश्रम कर रहे है। काकाजी गये ही नहीं है, वे इस मंच पर विराजमान स्वरुपों में प्रगट ही है। हम सभीको मिलकर इन संतभाईयों को साथ देना है। बहुत कम साधनों से, कम समय में इतना बडा काम पवई में होने जा रहा है वह बडी बात है। हे भरतभाई, जैसे काकाजीने हर परिस्थिति में हमारी रक्षा की वैसे आप भी करना वही प्रार्थना।

उसके बाद पवई मंदिर के नूतनीकरण के कार्य का अब तक का संक्षिप्त में विवरण करता हुए Video का दर्शन सभीने किया।

प.पू. वशीभाई ने कहा कि आज यहाँ त्रिवेणी संगम हो गया है - निर्मलस्वामीजी का ७५वाँ दीक्षादिन, शास्त्रीजी महाराज और भरतभाई का प्रागट्यदिन। शास्त्रीजी महाराज की स्मृति करने से ही सारे काम हो जाते है। ८ साल की उम्र में निर्मलस्वामीजीने दीक्षा ग्रहण की। कभी भी किसीको कोई फरियाद नहीं की, ऐसी अद्‌भुत साधुता उनमें दिखती है। आज यहाँ जो नजारा दिख रहा है वह गुरुहरि काकाजी के अथाक परिश्रम के फलस्वरुप है। गुणातीत ज्योत में हंसादीदी को मिले थे तो उन्होंने कहा कि भरतभाईने जानबूझकर ३१ जनवरी का दिन पसंद किया ताकि पूरा महिना उनका जन्मदिन मना सके। हम दोनों १४ साल काकाजी के साथ रहे। भरतभाई की दृष्टि केवल काकाजी की ओर ही रही। काकाजी के सिद्धांत के मुताबिक कार्य करना वह अंत तक उन्होंने रखा है। अभी पवई मंदिर के नूतनीकरण का कार्य चल रहा है उसमें बहुत प्रसंग बनते है ऐसे समय में धीरज और शांति रखना वह भरतभाई में सहज है। तो अब हमें जिम्मेदार भक्त बनना है। हमें देखकर हर कोई सोचे कि कैसे होंगे काकाजी! ऐसा जीवन हमारा बने वह हमें भरतभाई के पास मांगना है। तो महाराज हमें हर परिस्थिति में सुखी रखें वही प्रार्थना।

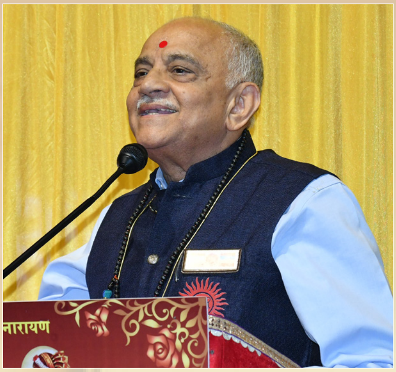

प.पू. दिनकरभाई ने कहा कि आज बहुत बडा दिन है। इंग्लिश तारीख के मुताबिक शास्त्रीजी महाराज का प्रागट्यदिन और निर्मलस्वामीजी का दीक्षादिन। ८ साल की उम्र में शास्त्रीजी महाराजने उन्हें कंठी पहना दी। गुरुहरि काकाजी महाराज को साक्षात्कार हुआ उसके वे साक्षी है। उस समय निर्मलस्वामीजी खुद गोंडल

P.P. Bharatbhai's 72nd Pragatya Din celebration at Megarugas Ground-Chandivali

Snehal Sindhu Jan 2026-V13.indd 14 25-03-2026 12:46:34

मंदिर में हाजर थे। ८५ की उम्र में भी वे यहाँ पधारे वह बडी बात है। वे बहुत सरल और निर्मल साधु है। अभी वे प्रेमस्वरुपस्वामीजी के साथ हरिधाम में रहकर हर जगह विचरण करते रहते है।

भरतभाई का दासत्व अद्‌भुत है। भरतभाई का प्रागट्यदिन यानि काकाजी का **Happiest Day.** कांदिवली में जहाँ वे रहते थे वहाँ हम दर्शन करने गये थे। उनकी बहनें गुणातीत ज्योत में भगवान भज रही है। ऐसे पूरा परिवार सत्संग में पहले से जुडा है। महेन्द्रबापु को धन्यवाद है कि भरतभाई जैसे रत्न हमें दिये। भरतभाई-वशीभाई पूर्व के कोई भाई-भाई होंगे तब आज हमें काकाजी द्वारा मिले। सभी गुणातीत स्वरुपों में काकाजी प्रगट ही है। तो हमें निमित्त मात्र बनना है। उसकी सरल Technique क्या है? तो बडे पुरुष जो बोले उसमें हाँ बोलना। तो भरतभाई-वशीभाई की आज्ञा में हम जीवन जीये वही प्रार्थना।

प.पू. बापुस्वामीजी ने कहा कि गुणातीतानंदस्वामी की बात में कहा है कि स्वामिनारायण मंत्र का जाप पाँच बार जो भी करेगा उसका भी कल्याण करना है। महाराजने कहा है कि हमारे हरिभक्त के जो दर्शन करेगा उसका भी कल्याण। वही पिढी आज भी चल रही है। पप्पाजीने कहा है कि सत्संग में संबंध मात्र से कल्याण हो जायेगा। वैसा आत्मीयता का संबंध हमें सभी के साथ करना है। गुरुहरि काकाजीने सत्संग का काम जो आगे बढाया वही कार्य आज गुणातीत स्वरुपों कर रहे है। योगी परिवार यानि संप-सुहृदभाव-एकता। ऐसे पवई के संतभाईयों में दिखता है। भरतभाई काकाजी के संबंधवाले सभी मुक्तों की

P.P. Bharatbhai's 72nd Pragatya Din celebration at Megarugas Ground-Chandivali

Various dignitaries in Pragatya Din celebration

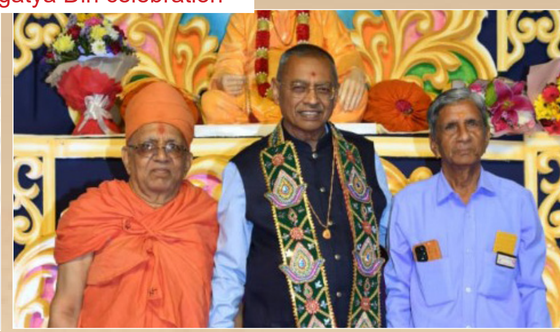

Snehal Sindhu Jan 2026-V13.indd 16 25-03-2026 12:46:35

सेवा काकाजी स्वरुप मानकर करते है। भरतभाई की साधुता, निर्मानीपना, दासत्वभाव अद्भुत है। आज यहाँ अक्षरधाम की ही सभा हो रही है। तो हम सभी में दिव्यभाव रखें और माहात्म्ययुक्त सेवा करते रहे वही प्रार्थना।

प.पू. भरतभाई ने आशीष देते हुए कहा कि आज हम निर्मलस्वामीजी का दीक्षादिन भी मना रहे है। हम बहुत भाग्यशाली है कि वे आज यहाँ उपस्थित है। आज गुरुजी आ नहीं पाये, लेकिन उनका मन यहीं है ऐसा महसूस हो रहा है। हम सभी अक्षरधाम के मुक्त है, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज और गुरुहरि काकाजी महाराज का कार्य आगे बढाने हम निरंतर प्रयास करते रहते है। इस आध्यात्मिक यात्रा में हमें अक्षरधाम का कोई मुक्त मिलता है तो हमें सहज ही आनंद होता है। हम जिन्हें मानते है उनको जो पसंद हो वह हमें भी पसंद होना चाहिए। वैसा काकाजी के साथ मेरा संबंध है। उनको जो पसंद है वही मुझे करना है, वही मेरे जीवन में नक्की किया। उन्होंने कभी भी मुझे डाँटा नहीं। जब मैं नया-नया सत्संग में जुडा तब काकाजी कहते थे कि 'आपका ज्ञानयज्ञ और योगयज्ञ पूरा हो गया है।' उस समय मुझे समझ ही नहीं रहा था कि वे क्या कहना चाहते है। **काकाजी स्वधाम जाने से पहले एक दिन मैं उनके पास बैठा था। वे हररोज देर रात जाग जाते थे। तब उनकी सेवा में उनके साथ होता था। तब एक दिन उन्होंने मुझे कहा कि आप कभी भी चिंता मत करना, जब ९९ रुपये की जरुरत होगी तो १०० रुपये आ जायेंगे।** आज ४० साल हो गये लेकिन कभी भी कुछ भी रुका नहीं। आज पवई मंदिर के कार्य के लिये बहुत हरिभक्तोंने सबकुछ अर्पण किया उसके लिये धन्यवाद है। सभी गुणातीत स्वरुपों के भी विशिष्ट आशीर्वाद मिले। हमेशा हमारा यही विचार होना चाहिए कि मुझे प्रभु और उनके संत को राजी करना है। हमारा स्वभाव हमें दु:खी करता है, वह टाले बिना सुखी होना असंभव है। तो गुणातीत स्वरुपों को प्रार्थना करनी है कि हमें जो भी नकारात्मक स्वभाव बीच में आता है, उसे टालना चाहिए। हमें प्रभु की प्रसन्नता के पात्र बनना है। हम जो भी नियम ले उसमें हमारी नियमितता होनी चाहिए। तो हम मंदिर का कार्य अच्छे से संपन्न कर पाये वही प्रार्थना।

Selfie Point

P.P. Bharatbhai's 72nd Pragatya Din celebration at Megarugas Ground-Chandivali

Snehal Sindhu Jan 2026-V13.indd 17 25-03-2026 12:46:37

P.P. Bharatbhai's 72nd Pragatya Din celebration at Megarugas Ground-Chandivali

Sydney Mandal celebrated P.P. Bharatbhai's 72nd Pragatya Din

अंत में सभी मंडल की ओर से भरतभाई को भेट और हार अर्पण हुए।
उसके बाद प्रागट्यदिन निमित्त केक कटिंग भी हुआ।

प.भ.डॉ. दिपकभाई परमार और Yoga के तीनों बेच के सभी विद्यार्थीओंने भी भरतभाई का प्रागट्यदिन 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में आनंदोत्सव के साथ मनाया।

P.P. Bharatbhai's felicitation by Yoga group at "Akshardham" Temple, Powai

Snehal Sindhu Jan 2026-V13.indd 18 25-03-2026 12:46:42

|| સ્વામિશ્રીજી ||

શનિવાર, તા. ૩૧/૦૧/૨૦૨૬

પરમ પૂજ્ય ભરતભાઈના ૭૨મા પ્રાગટ્યપર્વે...

પરમ પૂજ્ય ભરતભાઈ!
એક અનોખા વ્યક્તિ વિશેષ,
વ્યક્તિત્વને નિશેષ કરીને
કેવળ પ્રભુના સેવકપણાના અસ્તિત્વને જ જે રાખે શેષ.
બાહ્ય ગુણોને છૂપાવે, ન કોઈ જ વિશેષતા જણાવે,
સાદગી અને સાધુતાથી આંતરિક વૈભવ દિપાવે,
ગુરુહરિની પ્રસન્નતાથી જ અંતર રહે પુલકિત,
નિર્મળ, નિર્દોષ આનંદથી જ, મન રહે સદા પ્રફૂલ્લિત,
સંબંધવાળાની સેવા એ જ વૃત્તિ અને પ્રવૃત્તિ,
એ પ્રવૃત્તિમાંય માણી રહે છે અખંડ જે નિવૃત્તિ,
સદાય સમત્વભાવ અને સાક્ષીભાવની
શાંત-પ્રશાંત મૂર્તિ,
ગુરુહરિ કાકાજીના શબ્દોમાં
'ગુણાતીત સ્થિતપ્રજ્ઞતા'ની પ્રતિકૃતિ,
મહારાજના જ કર્તાહર્તાપણાની સહજ, સરળ સ્વીકૃતિ...

એ સ્વીકૃતિ એટલે ધીરજ,
એ સ્વીકૃતિ એટલે હરેક પ્રસંગે, હરેક પળે,
પ્રભુને જ ઉપાયભૂત થવા દેવાની,
અદમ્ય ઈચ્છા અને પ્રતીક્ષા, સહજ નૈસર્ગિક તિતિક્ષા,
ના કોઈ અંગત ઈચ્છા, તો માંગણી તો હોય જ ક્યાંથી?
માંગણી પણ નહીં, તો આગ્રહ-દૂરાગ્રહ તો સંભવે જ ક્યાંથી?
તેથી જ ગુરુહરિ કાકાજીએ પ્રમાણ્યા એમને
'મન વગરના પુરુષ!'

કોઈ અંગત ગમો-અણગમો નહીં,
કોઈ નિજનો સંકલ્પ-વિકલ્પ નહીં,
કોઈ પારકું-પરાયું નહીં, કોઈ અંગત કે આગવું નહીં,
કોઈ સગું કે વ્હાલું નહીં.
વાણી સૌમ્ય અને વિવેકી, વાત મુદ્દાસર અને ટૂંકી,
કોઈ બાલિશતા કે બફાટ નહીં,
કોઈને સમજાવી દેવાનો આગ્રહ કે ઉન્માદ નહીં,
વર્તનમાં કોઈ કંકાસ કે કકળાટ નહીં,
કોઈ રઘવાટ કે ઉચાટ નહીં.

સંબંધ જોઈ સહુનો સ્વીકાર,
સહુની સાથે સાલસતા અને
શાલીનતાભર્યો ઉચિત વ્યવહાર...

એ સ્વીકૃતિ એટલે સાક્ષીભાવ,
સાક્ષીભાવ એટલે નિષ્ક્રિયતા નહીં,
કોઈ જડતા કે સ્તબ્ધતા નહીં,
પ્રભુની દિવ્ય લીલાનાં દર્શન,
સ્પંદનરહિત અને વંદનસહિત.
પ્રભુની પ્રેરણા ઝીલવાની સમતાપૂર્વકની ઉત્કટતા,
ભક્તોની ભક્તિ માટેની સક્રિયતા સહિતની તત્પરતા,
ક્યાંય કોઈની સાથે વ્યર્થ બોલાબોલ કે કોલાહલ નહીં,
કોઈ અણછાજતી ઉતાવળ કે ધમાલ નહીં,
બધા જ ક્રિયાયોગ સહજ સેવારૂપે,
બધી જ સેવામાં પ્રથમ મહત્વ પ્રયોજન,
પછી વ્યવસ્થિત આયોજન અને
છેલ્લે મુદ્દાસર અમલીકરણ.
પ્રભુની સહજ પ્રેરણા પ્રમાણે વપરાય
ઈન્દ્રિયો અને અંતઃકરણ, સાફલ્યનો યશ પ્રભુને ચરણ,
કોઈ સ્તુતિ-પ્રશંસાની અપેક્ષા નહીં,
કોઈ માન-અકરામની પ્રતિક્ષા નહીં,
પ્રભુના નિમિત્ત બની વપરાયા તેનો જ આનંદ અંતરે,
તે જ સાહજિક સભરતા ઊભરે!

હે પરમ પૂજ્ય ભરતભાઈ!
આપના ૭૨મા પ્રાગટ્યપર્વે
પ્રભુના કર્તાહર્તાપણાના સહજ સ્વીકાર સહિતનું મન,
ભક્તોની સેવા માટે તત્પર રહે,
એવું નિરામય સ્ફૂર્તિવાળું તન,
આપના જેવું નિજાનંદી અને આંતરિક નિરાંતવાળું જીવન,
અમ સહુનું બને અને
આપની સાચી પ્રસન્નતાનાં પાત્ર બનીએ એવા
કૃતનિશ્ચયી સંકલ્પના અને હાં હાં ગડથલ રૂપી વર્તનના
આશિષ આપજો અમને...

'અક્ષરધામ' મંદિર, પવઈના સંતભાઈઓ, સંતબહેનો તથા મુક્તસમાજના જય શ્રી સ્વામિનારાયણ...

Snehal Sindhu Jan 2026-V13.indd 19 25-03-2026 12:46:47

RNI Regn No : MAHMUL/2015/62272
Date of publication: 8th of every month
POSTED AT MUMBAI PATRIKA CHANNEL SORTING OFFICE MUMBAI 400001

Postal Regn No: MCW/329/2018-20
Date of posting:11th of every month

Summary of Events

(1) Famous Music Director Shri. Harry Anand at "Akshardham" Temple, Powai on 2nd January. (2) Poshi Poonam and Anoopam Mission-Mogri Temple Patotsav on 3rd January. (3) Jholi Sabha and P.P. Bharatbhai's Pragatya Din celebration at various places in Gujarat and Maharashtra from 3rd January onwards. (4) Inauguration on Bharatanatyam classes at "Akshardham" Temple, Powai on 5th January. (5) Bag distribution from Yogi Divine Society at Sankarda School on 6th January. (6) Khat Mahurat ceremony at "Adivasi Kukna Samaj Bhavan Hall" at Rumla-Gholar on 7th January. (7) Bhajan Sandhya on 7th January at Rumla-Gholar. (8) Jholi Sabha on the auspicious occasion of Makarsankranti at "Akshardham" Temple, Powai on 17th January. (9) Dwishatabdi (Bi-Centenary) Mahosav of Shikshapatri and B.S. Shashtriji Maharaj Pragatya Din (Vasant Panchmi) celebration at "Akshardham" Temple, Powai on 24th January. (10) Patotsav Mahapooja at Guruhari Kakaji Maharaj's Pragatyasthan (Birth Place) at Nadiad on 26th January. (11) Visit by Saint Brothers to meet P.P. Nirmalswamiji at Kandivali on 27th January. (12) P. Mananbhai and devotees to meet P.P. NirmalSwamiji on 26th January. (13) P.P. Bharatbhai's 72nd Pragatyadin celebration at Megarugas Ground, Chandivali on 31st January. (13) Article for P.P. Bharatbhai's 72nd Birthday on 31st January.

Space for address

Space for franking

Printed Matter - Book Post

From
YOGI DIVINE SOCIETY
6D Sonawala Building, Tardeo,
Mumbai - 400 007 Tel: 2380 2527
'Akshardham' Swaminarayan Temple,
Near Hiranandani Hospital, Powai, Mumbai - 400 076
Tel: 2578 2151/2579 4314 Email: isrc@kakaji.org

Printed & Published by Bharat P Mehta on behalf of Yogi Divine Society & Printed at Jalaram Enterprise, Fairy Manor, 13, Rustom Sidhwa Marg (Gunbow Street), Fort, Mumbai - 400 001 & Published by Yogi Divine Society, 6D, Sonavala Building, 4th Floor, Tardeo, Mumbai - 400 007.

Editor: Bharat P Mehta

Snehal Sindhu Jan 2026-V13.indd 20 25-03-2026 12:46:49